IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं में सशक्तिकरण का तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ. डी. लक्ष्मी
प्राध्यापिका (शिक्षा विभाग)
भिलाई मैत्री कॉलेज, जिला-दुर्ग
(छ.ग.)

अर्पणा जाम्भुलकर,
व्याख्याता (एल.बी.)
शा.उ.मा.शाला, ढारा, डोंगरगढ़
राजनादगांव (छ.ग.)

सारांश –

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी बालिका में सशक्तिकरण का तुलनात्मक अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में राजनांदगांव जिले के राजनांदगांव तहसील क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के 100 बालिकाओं जिसमे शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 50 बालिकाओं तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 50 बालिकाओं का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण हेतु देवेन्द्र सिंह सिसोदिया और अल्पना सिंह द्वारा निर्मित बालिका सशक्तिकरण मापनी स्केल (AGES) का प्रयोग किया गया है। चयनित बालिकाओं पर उपरोक्त उपकरण का प्रशासन करने उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी-मूल्य ज्ञात किया गया। निष्कर्ष दर्शाते है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। जबकि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर पाया गया

कुंजी शब्द : बालिका सशक्तिकरण, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण-शहरी

प्रस्तावना –

एक बालक की प्रथम गुरू उसकी मां होती है वाल अपनी बुनियादी शिक्षा अपनी माता से ही प्राप्त करता है अतः अगर महिला सशक्त होती है तो वह अपने परिवार को एक सही दिशा निर्देश दे सकती है तथा एक सशक्त महिला के रूप में सभ्य समाज का निर्माण कर सकती है अपने बालक को अच्छे संस्कार दे सकती है सही और गलत का ज्ञान दे सकती है। अतः एक महिला के शिक्षित होने से पूरा समाज शिक्षित हो सकता है यह उस सूर्य की भांति होगा जो स्वयं भी प्रकाशित होता है तथा पूरे संसार को प्रकाशित करता है। भारत रत्न डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने कहा था "महिला की संगत के बिना एकता निरर्थक है शिक्षित महिलाओं के बिना बेकार है और महिलाओं के ताकत के बिना आंदोलन अधूरा है।" आज भी हमारा समाज पुरूष प्रधान या पितृसत्तात्मक समाज के रूप में जाना जाता है, जिसके परिणाम मानसिक विकृति के चलते कन्या भ्रूण हत्या के रूप में इंगित होती है।

राज्य और केन्द्र शासन के कोशिशों का ही प्रतिफल है कि कन्या के जन्म के पूर्व ही कोख में मार देने जैसी घटना पर रोक लगी है। जब भी बेटियों को बराबरी का अधिकार मिलता है, तो उन्होंने हमेशा खुद को साबित किया है कि उनकी शारीरिक और बौद्धिक क्षमता पुरूषों से कहीं अधिक है। उन्होंने अपने माता-पिता, समाज और देश का नाम रोशन किया है। महिला को सशक्त बनाने के लिए बालिका का आत्मविश्वास से भरपूर परवरिश की जानी चाहिए। जिससे कि बेटियों को खुला आकाश मिल सके।

बालिका सशक्तिकरण –

एक महिला के सशक्तिकरण से तात्पर्य है कि वह अपने जीवन से जुड़े सारे निर्णय स्वयं ले सके। इसके लिए उसे शारीरिक मानसिक और सामाजिक रूप से मजबूत होना पड़ेगा। ताकि व जीवन की ऊंचाईयों को छू सके। समाज में उसकी भागीदारी और महत्ता प्रमाणित हो सके। बालिका सशक्तिकरण का अर्थ

Principal
Bhilai Maitri College
Risali Sector, Bhilai

बालिकाओं की उस क्षमता से है जिसमें वे अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सकें तथा बालिकाओं में स्वायत्तता और आत्म निर्भरता के स्तर को बढ़ाने एवं स्वनिर्धारित तरीके से अपने प्रतिनिधित्व को निर्धारित कर सकें।

सम्बंधित शोध अध्ययन –

- **ग्राहम (2016)** ने उन्नतशील राष्ट्रों में कन्या सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन किया। अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 260 छात्राओं को लिया गया तथा स्वनिर्मित प्रश्नों की क्रमबद्ध सूची का प्रयोग किया गया। जिसमे पाया गया कि विकासशील देशों में कन्या सशक्तिकरण में शिक्षा अहम् स्थान रखता है। समस्त राष्ट्र देशों के आपसी सहभागिता से कन्या उन्मुखी कार्यक्रम चला कर अपने देशों में छात्राओं की जागरूकता बढ़ा सकते है।
- **स्मृति सिन्हा (2016)** ने दिल्ली के शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों में किशोरी छात्राओं के मध्य समानता का अध्ययन किया। अध्ययन में देवेन्द्र सिंग सिसोदिया तथा अल्पना सिंग (2009) द्वारा निर्मित उपकरण तथा 400 छात्राओं का दिल्ली के विभिन्न स्कूलों से न्यादर्श के रूप में चयन किया गया तथा पाया कि शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के छात्राओं के राजनैतिक–सामाजिक और कानूनी जागरूकता के स्तर में सार्थक अंतर है। अशासकीय विद्यालयों के छात्राओं में जागरूकता का स्तर अधिक पाया गया।
- **जेम्स एवं अमृतावली (2017)** ने वैल्लुर जिले में माध्यमिक शिक्षा से किशोरी बालिका सशक्तिकरण के अंतर्गत 300 पढने वाली बालिकाओं को प्रतिदर्श बनाते हुये देवेन्द्र सिंग सिसोदिया तथा अल्पना सिंग (2009) द्वारा निर्मित उपकरण का उपयोग किया गया। पाया गया कि महिला सशक्तिकरण के लिए स्कूल स्तर से ही प्रयास होना चाहिए, शिक्षा महिला सशक्तिकरण का सबसे सही तथा मजबूत माध्यम है, उन्होंने पाया कि शासकीय विद्यालयों में और अधिक महिला उन्मुखी कार्यक्रमों की आवश्यकता है जिससे छात्राओं में जागरूकता बढ़ाया जा सकें।
- **शिखा दत्त (2019)** ने आसाम के ग्रामीण तथा शहरी किशोरियों के बीच महिला सशक्तिकरण जागरूकता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के प्रतिदर्श में 195 बालिकाओं का अध्ययन किया तथा स्वनिर्मित प्रश्नों की सूची लिया गया। प्रतिदर्श हेतु 195 ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं का लिया गया, अवलोकन में यह देखा गया कि ग्रामीण छात्राओं में महिला सशक्तिकरण जागरूकता का स्तर शहरी छात्राओं के तुलना में कम है। ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं के जागरूकता के स्तर में प्रासंगिक भिन्नता पाई गई।
- **श्रवनकुमार (2019)** ने तमिलनाडु में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों 15 से 49 वर्ष के 200 विविाहित महिलाओं को अपने शोध हेतु प्रतिदर्श बनाया। अध्ययन में एस.पी.एस.एस विश्लेषण के द्वारा CHI square ज्ञात किया गया तथा पाया कि शहरी क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण चेतना का स्तर ज्यादा है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित कार्यक्रम और कानूनी जागरूकता हेतु अभियान चलाये जाने की आवश्यकता है जिससे ग्रामीण महिलाओं के जागरूकता के स्तर को बढ़ाया जा सकें। विद्यालय स्तर से इसकी शुरूआत छात्राओं के लिए लाभकारी है।

संबंधित शोध अध्ययन की समीक्षा –

ग्राहम (2016) ने पाया गया कि विकासशील देशों में कन्या सशक्तिकरण में शिक्षा अहम् स्थान रखता है। समस्त राष्ट्र देशों के आपसी सहभागिता से कन्या उन्मुखी कार्यक्रम चला कर अपने देशों में छात्राओं की जागरूकता बढ़ा सकते है। स्मृति सिन्हा (2016) ने परिणाम में पाया कि शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के छात्राओं के राजनैतिक–सामाजिक और कानूनी जागरूकता के स्तर में सार्थक अंतर है। अशासकीय विद्यालयों के छात्राओं में जागरूकता का स्तर अधिक पाया गया। जेम्स एवं अमृतावली (2017) ने ने निष्कर्ष में प्राप्त किया कि महिला सशक्तिकरण के लिए स्कूल स्तर से ही प्रयास होना चाहिए, शिक्षा महिला सशक्तिकरण का सबसे सही तथा मजबूत माध्यम है। शिखा दत्त (2019) के परिणाम दर्शाते है कि ग्रामीण छात्राओं में महिला सशक्तिकरण जागरूकता का स्तर शहरी छात्राओं के तुलना में कम है। श्रवनकुमार (2019) ने पाया कि शहरी क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण चेतना का स्तर ज्यादा है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित कार्यक्रम और कानूनी जागरूकता हेतु अभियान चलाये जाने की आवश्यकता है।

अध्ययन की आवश्यकता –

जब स्त्री की स्वयं की स्थिति सामाजिक, अर्थ विषयक, शैक्षिक आदि दृष्टिकोण से उच्च होगी तो वह परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे पायेंगी, यह प्रश्न अत्यन्त चिन्ताशील है। एक तो स्त्रियाँ स्वयं राष्ट्र की आधी से कम जनसंख्या है तथा दूसरा, बच्चे, युवा, प्रौढ़ और वृद्धजन उन पर अपनी जरूरतों के लिए निर्भर रहते है। यह अध्ययन परिवार, समाज तथा विद्यालय एवं राष्ट्र हेतु समान रूप से उपयोगी है क्योंकि बालिका सशक्तिकरण का अर्थ बालिका के लिए सर्व सम्पन्न और खुले हुए माहौल में विकसित होने हेतु सम्भावनाओं के द्वार खोलने से है। जिसके परिणामस्वरूप छात्राओं के आत्म–विश्वास में बढोत्तरी हो और वे सशक्त हो सके। एक सशक्त छात्रा ही सशक्त नारी के रूप में विकसित हो सकती है जिससे सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन करने में जिम्मेदारीपूर्वक भूमिका अदा कर पाएगी।

अध्ययन का उद्देश्य –

- ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन करना।

Principal
Bhilai Maitri College
Risali Sector, Bhilai

- ग्रामीण एवं शहरी अशासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना –

H_{01} ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_{02} ग्रामीण एवं शहरी शासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_{03} ग्रामीण एवं शहरी अशासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अनुसंधान विधि –

अध्ययन के उद्देश्य हेतु परिकल्पना के परीक्षण कर आंकड़ें एकत्र करने हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

अध्ययन की परिसीमा –

प्रस्तुत शोधकार्य राजनांदगांव जिले के राजनांदगांव तहसील तक ही सीमित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उन्नतर माध्यमिक स्तर के बालिकाओं तक सीमित किया गया है। अध्ययन हेतु राजनांदगांव तहसील क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी 50 शासकीय एवं 50 अशासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं तक सीमित किया गया है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध अध्ययन राजनांदगांव जिले के राजनांदगांव तहसील क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के 50 शासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालय एवं 50 अशासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालय के बालिकाओं का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण –

शून्य परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन तथा सार्थकता ज्ञात करने हेतु टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना परिणाम व विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध की समस्या राजनांदगांव जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की शासकीय एवं अशासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं से प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या विश्लेषण एवं निष्कर्ष हेतु परिकल्पना का सत्यापन किया गया।

Principal
Bhilai Maitri College
Risali Sector, Bhilai

परिकल्पना –

H_{01} –

ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 1.1

ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के सशक्तिकरण सारणी विवरण

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्य मान	प्रमाणिक विचलन	टी-मूल्य
ग्रामीण	50	193	25.5	0.83
शहरी	50	191	24.9	
df = 98, p >0.05 सार्थक अंतर नहीं पाया गया				

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं की संख्या 50, मध्यमान 193 तथा प्रमाणिक विचलन 25.5 है तथा शहरी क्षेत्र के बालिकाओं की संख्या 50, मध्यमान 191 प्रमाणिक विचलन 24.9 है। स्वतंत्रता की कोटी df=98 हैं। दोनों आँकड़ों की तुलना करने के लिए t मान की गणना की गई। t का मान 0.83 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t-सारणी का अवलोकन किया गया। t का मान (1.66) स्तर पर सारणी मान 0.05 से कम है। अतः ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना H_{01} स्वीकृत होती है।

H_{02} –

ग्रामीण एवं शहरी शासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 1.2

ग्रामीण एवं शहरी शासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण की सारणी विवरण

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्य मान	प्रमाणिक विचलन	टी-मूल्य
ग्रामीण	25	190	21.9	1.29
शहरी	25	192.2	23.3	
df = 48, p >0.05 सार्थक अंतर नहीं पाया गया				

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं की संख्या 25, मध्यमान 190 तथा प्रमाणिक विचलन 21.9 है तथा शहरी क्षेत्र के बालिकाओं की संख्या 25, मध्यमान 192.2 प्रमाणिक विचलन 23.3 है। स्वतंत्रता की कोटी df=48 हैं। दोनों आँकड़ों की तुलना करने के लिए t मान की गणना की गई। t का मान 1.29 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t-सारणी का अवलोकन किया गया। t का मान (1.67) स्तर पर सारणी मान 0.05 से कम है। अतः ग्रामीण एवं शहरी शासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना H_{02} स्वीकृत होती है।

H_{03} –

ग्रामीण एवं शहरी अशासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 1.3
ग्रामीण एवं शहरी अशासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण का सारणी विवरण

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्य मान	प्रमाणिक विचलन	टी-मूल्य
ग्रामीण	25	189.3	22.2	2.34
शहरी	25	191.6	27.3	
df=48, $p<0.05$ सार्थक अंतर पाया गया				

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं की संख्या 25, मध्यमान 189.3 तथा प्रमाणिक विचलन 22.2 है तथा शहरी क्षेत्र के बालिकाओं की संख्या 25, मध्यमान 191.6 प्रमाणिक विचलन 27.3 है। स्वतंत्रता की कोटी df=48 है। दोनों आँकड़ों की तुलना करने के लिए t मान की गणना की गई। t का मान 2.34 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t-सारणी का अवलोकन किया गया। t का मान (1.67) स्तर पर सारणी मान 0.05 से अधिक है। अतः ग्रामीण एवं शहरी अशासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः परिकल्पना H_{03} अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। जबकि अशासकीय उन्नतर माध्यमिक विद्यालयों के बालिकाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अंतर पाया गया जिसका कारण यह है कि शहरी विद्यालय के छात्राओं को माता पिता का सहयोग एवं स्वतंत्रता अधिक होने के कारण उनमें आत्म-विश्वास की भावना अधिक होता है जो उनके सशक्तिकरण की भावना को प्रभावित करता है।

अनुकरणीय अध्ययन –

शोधकर्ता द्वारा चयन की गई समस्या के आधार पर निम्नलिखित क्षेत्रों में अध्ययन किये जा सकते है –

- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयीन स्तर के छात्राओ के सशक्तिकरण का तुलनात्मक अध्ययन।
- आर्थिक रूप से मजबूत एवं आर्थिक रूप के कमजोर अभिभावकों की बालिकाओं के सशक्तिकरण का तुलनात्मक अध्ययन।
- साक्षर एवं निरक्षर बालिकाओं की सशक्तिकरण का तुलनात्मक अध्ययन।
- नौकरीपेशा एवं घरेलु महिलाओं में सशक्तिकरण का तुलनात्मक अध्ययन
- शहरी एवं ग्रामीण अनुसूचित क्षेत्रों की महिलाओं के सशक्तिकरण का तुलनात्मक अध्ययन।

सुझाव –

ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में बालिका सशक्तिकरण हेतु अत्यधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है जिससे बालिकाएं आत्मनिर्भर एवं आत्मविश्वास रूप से सफल बन सकें। ग्रामीण क्षेत्रों में माता-पिता का भी समय-समय पर परामर्श एवं निर्देशन अवश्य रूप से किया जाना चाहिए, तथा उन्हें इस विषय पर भी समझाने की आवश्यकता है कि वह अपने बालक और बालिकाओं के मध्य किसी भी प्रकार का भेदभाव ना करते हुए, उनसे समान व्यवहार करते हुए, समान अवसर प्रदान करे तथा बेटियों को भी बराबर की स्वतंत्रता प्रदान करे तथा उन पर भी अपना विश्वास बनाये रखे जिससे बालिकाओं की आत्म-विश्वास में वृद्धि हो सके। पारिवारिक वातावरण, शालेय वातावरण तथा समाज में समान अवसर प्राप्त होने पर बालिकाओं को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में आसानी होगी तथा वह बालिका सशक्तिकरण की ओर उन्मुख होंगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- Graham (2016), *Empowering adolescent girls in developing countries; The potential role of education; policy futures in education* 14(5) 556-577 © Author(s) 2015.DOI:10.1177/1478210315610257.
- Jemes & Amritavali (2017), *Women Empowerment through secondary Education International Journal of Application or Innovation in Engineering & Management* 6(7) 2319-4847, www.ijaiem.org
- NISHA SHARMA & GAGAN DEEP (2023), A Comparative Study of Women Empowerment among Rural and Urban Female Secondary School Teachers in Punjab State, *International Journal of Research in Humanities & Soc. Sciences*, 11(1), Jan-2023, 11-15, www.raijmr.com
- P. Saravanakumar, Elizabeth Varakumari (2019), A comparative study on women empowerment in urban and rural setting in Tamil Nadu, *International Journal of Community Medicine and Public Health*, 2019 Mar; 6(3):1108-1111 http://www.ijcmph.com
- Shikha D. (2019), A Comparative study of women empowerment awareness level of Adolescent Girls in Rural and Urban H.S. Schools of Assam; *International journal of Innovation and research.* 7(5) 370-373. DOI : https://doi.org/10.31686/ijier.vol17 ISSS 1521.
- Saravana Kumar (2019), A comparative study on women empowerment in Urbon and Rural setting in Tamil Nadu. *International journal of community Medicine and Public Health*; 6(3), 1108-1111, 2394-6032/ 2394-6040, DOI:10.18203/2394-6040.ijcmph20190594 http://www.ijcmph.com
- Smriti S. (2016), A comparative study of women empowerment awareness level of adolescent Girls in Private and Government school of Delhi, *International journal of Education and Information studies* (6) 7-10, 2277-3169.
- Shivi Agrawal & Pratibha Sagar (2022), A STUDY OF EMPOWERMENT OF ADOLESCENT GIRLS IN HIGHER SECONDARY SCHOOLS OF

Principal
Bhilai Maitri College
Risali Sector, Bhilai

BAREILLY DISTRICT, *International Research Journal of Modernization in Engineering Technology and Science*, 4(11), Nov-2022, 66-69, www.irjmets.com

- Sharmin Akter, Arif Ibne Asad (2018), The outlook of Women Empowerment: A Comparative Study on Rural and Urban Women in Rajshahi District of Bangladesh, *International Journal of Science and Research (IJSR)*, 8(8), Aug-2019, 1755-1759, www.ijsr.net

Principal
Bhilai Maitri College
Risali Sector, Bhilai